The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Year-8 Volume: II, April-June, 2026 Issue-30 ISSN: 2582-1296 (Online)
Website: www.theasianthinker.com **Email**: asianthinkerjournal@gmail.com

54. सामुदायिक रेडियो कार्यक्रमों के द्वारा महिला जागरूकता और सशक्तिकरण का अध्ययन

डॉ. अनामिका शर्मा
पीएचडी, पत्रकारिता एवं जनसंचार
व्याख्याता, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया विभाग
कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)
ई-मेल- dranamika4486@gmail.com
9575011244
डॉ. वैशाली राज
पीएचडी, पत्रकारिता एवं जनसंचार
ई-मेल- raj20.vaishali@gmail.com
8470852632

शोध सार

भारत देश में महिलाओं को जिस प्रकार के संवैधानिक अधिकार प्राप्त हैं, वैसा उदाहरण कई मामलों में, कई विकसित देशों में भी देखने को नहीं मिलता। रोजगार के समान अवसर, राजनीति व शासन में प्रतिनिधित्व, स्थानीय निकायों में आरक्षण, संपत्ति में अधिकार आदि। परंतु अधिकारों से इतर यदि देश में महिलाओं की स्थिति के बारे में बात करें तो आज भी विकास के कई पैमानों में देश की महिलाएं पिछड़ी हुई हैं, मसलन शिक्षा, स्वास्थ्य और पोषण, लैंगिक असमानता, गरीबी आदि। कई सरकारी, गैर-सरकारी संस्थाओं द्वारा किये गए अध्ययनों से भी पता चलता है कि देश की आधी आबादी वंचित और शोषित है। विगत कुछ समय से भी देश की महिलाओं को समान अवसर प्रदान करने के लिये प्रयास जारी हैं। महिलाओं की स्थिति में सुधार के लिये देश- प्रदेश की सरकारों ने कई योजनाएं बनाईं और उनके क्रियान्वयन पर जोर भी दिया है। इस प्रक्रिया में विकास की योजनाओं के व्यापक संचार पर भी गौर किया जा रहा है। प्रसारण माध्यम के रूप में रेडियो का महत्व किसी से छिपा नहीं है। भारत जैसे विशाल, भौगोलिक और सांस्कृतिक विविधता से भरे देश में रेडियो प्रसारण क्षमता और श्रोताओं तक पहुंच के मामले में दूसरे किसी भी माध्यम से आगे ही है। 1995 में सुप्रीम कोर्ट के प्रसारण तरंगों पर किये गए एक फैसले पर सरकार द्वारा किये गए विनियमन ने रेडियो संचार से विकास का मार्ग प्रशस्त किया है। देश में सामुदायिक रेडियो की शुरूआत और इससे विकास संचार के सफल प्रयासों से यह प्रसारण सेवा विकास संचार का एक माध्यम बनती जा रही है। प्रस्तुत अध्ययन कुछ केस अध्ययनों के द्वारा इसी बात की पड़ताल करता है कि भारत में सामुदायिक रेडियो के द्वारा गरीब तबके और पिछड़ी महिलाओं की स्थिति सुधारने, उन्हें जागरूक करने और उनके सशक्तिकरण में किस प्रकार के प्रयास किये जा रहे हैं। साथ ही यह अध्ययन महिलाओं पर इन प्रयासों के प्रभाव का भी विश्लेषण भी करता है।

मुख्य शब्द- सामुदायिक रेडियो, प्रसारण, विकास संचार, जागरुकता, सशक्तिकरण।

1- प्रस्तावना

भारत देश की परंपरा और सांस्कृतिक विरासत इस बात का सबूत पेश करती रही है कि भारतीय समाज में महिलाओं का स्थान विशेष रहा है। इतिहास में कई ऐसे उदाहरण मौजूद हैं जिनसे समाज में महिलाओं के विशेषाधिकार के बारे में जानकारी प्राप्त होती है। सिंधु घाटी सभ्यता से प्राप्त अवशेषों से इस बात का पता चलता है कि उस समय महिलाओं को समाज में सम्मानजनक स्थान प्राप्त था, साथ ही वे तुलनात्मक रूप से अन्य सभ्यताओं से ज्यादा स्वतंत्र थीं।

कालांतर में विभिन्न सभ्यताओं के भारत आगमन और तात्कालिक शासन की नीतियों के द्वारा महिलाओं की स्थिति में धीरे धीरे गिरावट देखने को मिलती है। भारत की आजादी की लड़ाई में एक बार फिर महिलाओं की सशक्त स्थिति उभरकर सामने आती है। देश आजाद हुआ तब महिलाओं का सम्मान भी समाज में बढ़ा, लेकिन महिला सशक्तिकरण की गति कई दशकों तक धीमी ही रही। लैंगिक असमानता, निरक्षरता, गरीबी, स्वास्थ्य, उत्पीड़न ऐसी समस्याएं हैं, जो महिलाओं की प्रगति में गंभीर बाधा पहुंचा रही हैं। भारत में महिलाओं की वर्तमान स्थिति के बारे में बात करें तो 2011 की जनगणना के अनुसार कुल जनसंख्या का 48 प्रतिशत महिला जनसंख्या है, इस प्रकार ये आंकड़े प्रदर्शित करते हैं कि देश की लगभग आधी आबादी महिलाओं की है। साक्षरता दर लगातार बढ़ने के बाद भी महिलाओं की स्थिति इसमें कुछ ज्यादा अच्छी नहीं है, देश की महिलाओं की साक्षरता दर 65 प्रतिशत के करीब है। महिलाओं में पुरूषों की तुलना में गरीबी की दर भी अधिक है और पोषण के मामले में भी महिलाएं पिछड़ी हुई हैं। इन सभी असमानताओं को ध्यान में रखते हुए देश और प्रदेश की सरकारों ने महिलाओं के उत्थान के लिये कई कार्यक्रम और अभियान चला रखे हैं।

विकास और राष्ट्रीय प्रगति में महिलाओं की समान भागीदारी सुनिश्चित करने के लिये भारत सरकार ने विभिन्न विधायी और सक्षम प्रावधान किये हैं। 2023 में देश की जी-20 प्रेसीडेंसी ने भी अपनी छह प्राथमिकताओं में से एक के रूप में महिलाओं के नेतृत्व वाले विकास को सूचीबद्ध किया है। श्रम बाजार में लैंगिक अंतर के प्रमुख चालकों पर उनके काम के लिये प्रो. क्लाउडिया गोल्डिन को अर्थशास्त्र में नोबल पुरस्कार दिये जाने के साथ ही लैंगिक मुद्दों की व्यापक मान्यता स्पष्ट हो गई है। वहीं भारतीय महिलाओं को प्रभावित करने वाले बुनियादी जरूरतों के मुद्दे जैसे स्वच्छता, साक्षरता, सुरक्षा, पोषण, राजनीतिक एवं आर्थिक अवसर की समानता और व्यक्तिगत पहचान की भावना आदि हैं। महिला विकास से महिला नेतृत्व वाले विकास के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये उपरोक्त सभी मुद्दों की 360- डिग्री समीक्षा और उनसे निपटने के लिये एक ईमानदार , व्यवहारिक दृष्टिकोण की आवश्यकता है (आर्थिक सर्वेक्षण, 2024)। भारत में आंगनवाड़ी केंद्रों की सहायता से महिलाओं और बच्चों को पोषण सुरक्षा प्रदान करना, जेंडर बजट के द्वारा महिलाओं के विकास के लिये बजट में प्रावधान करना, महिला स्वसहायता समूहों के माध्यम से महिलाओं को आर्थिक संबल देना और कौशल विकास में सहायता करना, इन सभी लक्ष्यों पर सरकारें कार्य कर रहीं हैं। देश में दो दशक पहले शुरू हुई सामुदायिक रेडियो प्रसारण सेवा भी इन्हीं लक्ष्यों की पूर्ति के लिये एक सशक्त माध्यम के रूप में स्थापित हो रही है। सामुदायिक रेडियो विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों और समुदायों की आवश्यकताओं और आकांक्षा को पूरा करने में प्रयासरत हैं।

सामुदायिक रेडियो की शुरूआत मुख्यधारा के संचार माध्यमों के विकल्प के रूप में हुई थी। यह समाज के दबे, कुचले ,शोषित व उत्पीड़ित वर्ग की आवाज के रूप में उभरा, लेकिन इसका दायरा बढ़ता गया और कालांतर में दुनिया भर में ये विभिन्न प्रकार के रूपों में उपलब्ध होने के साथ साथ विकास संचार और सहभागी संचार के प्रमुख उपकरण के तौर पर मान्यता प्राप्त कर रहा है। तंजानिया में शिक्षा द्वारा किशोर लड़कियों और युवा महिलाओं को सशक्त बनाने पर संयुक्त कार्यक्रम के माध्यम से यूनेस्को ने लैंगिक समानता के प्रश्नों पर समुदाय के सदस्यों की जागरूकता बढ़ाने के लिये सामुदायिक रेडियो के साथ मिलकर काम किया है। भारत में भी विकास के प्रयासों को जन-जन तक पहुंचाने के लिये सामुदायिक रेडियो को महत्वपूर्ण संचार माध्यम माना गया है और इससे जुड़ी विस्तृत पॉलिसी भी बनाई गई है। प्रसारण माध्यम से वंचित महिलाओं के सशक्तिकरण के प्रारंभिक उदाहरणों में से एक डेक्कन डेवलपमेंट सोसाइटी (डीडीएस) के द्वारा नैरोकास्टिंग को लेकर उठाए गए कदम भी हैं। डीडीएस विभिन्न

मुद्दों पर दो दशकों से अधिक समय से ग्रामीण, गरीब और मुख्य रूप से दलित महिलाओं के साथ आंध्रप्रदेश के मेडक जिले के गांवों में काम कर रही है। इसका मुख्य उद्देश्य खाद्य, बीज, प्राकृतिक संसाधन पर स्वायत्तता और बाजार तक पहुंच जैसे मुद्दों से स्थानीय महिलाओं को अवगत कराकर उन्हें आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाना है।

वर्ष 1998 में यूनेस्को के समर्थन से डीडीएस ने एक स्थानीय समुदाय के स्वामित्व वाला रेडियो स्टेशन स्थापित करने का प्रयास किया था, लेकिन प्रसारण की अनुमति नहीं मिल पाई। इसके बाद डीडीएस ने ऑडियो प्रोडक्शन शुरू करने का फैसला किया कार्यक्रमों को गांव की महिलाओं तक पहुंचाने के लिए उत्पादन, और नैरोकास्टिंग तकनीकों का उपयोग किया गया। महिला सशक्तिकरण, क्षेत्रीय विकास, स्वदेशी ज्ञान और संस्कृतियों से संबंधित मुद्दे कार्यक्रम का प्रमुख हिस्सा हुआ करते थे। इन कार्यक्रमों को महिलाओं के संगमों या स्थानीय समूहों के नेटवर्क के माध्यम से प्रसारित किया जाता था और एक विशिष्ट समय पर रेडियो प्रसारण की तरह सुना जाता था। डीडीएस सामुदायिक रेडियो परियोजना से जुड़ी पास्तापुर की दलित महिलाओं के सशक्तिकरण को दुनिया भर में सराहा गया और इससे सामुदायिक रेडियो स्वामित्व की मांग को मजबूत करने में मदद मिली। राजधानी दिल्ली से महज अस्सी किलोमीटर की दूरी पर हरियाणा का मुस्लिम बहुल मेवात जिला आता है, यहां अल्फाज- ए- मेवात नाम का सामुदायिक रेडियो महिलाओं की आवाज बुलंद कर रहा है। इस रेडियो पर स्थानीय महिलाएं अपनी समस्याओं पर खुलकर बात करती हैं, मनपसंद गाने सुनती हैं।

शुरूआत में यहां महिलाओं के साथ कार्य करना बहुत कठिन था। वे बात करने से झिझकती थीं, स्थानीय धर्म गुरूओं ने भी 'मनोरंजन हराम है' का नारा देकर महिलाओं की रेडियो में भागीदारी का विरोध किया। बाद के समय में इस रेडियो के प्रयासों और महिलाओं की भागीदारी के कारण यह सामुदायिक रेडियो यहां की महिलाओं की आवाज बन गया है। विस्तृत पॉलिसी भी बनाई गई है। लोकतांत्रिक व्यवस्था में विकास को जन जन तक पहुंचाने में उनकी भागीदारी महत्वपूर्ण है। ऐसे में सामुदायिक रेडियो अपनी मजबूत उपस्थिति दर्ज करा रहा है । प्रसारण माध्यम से वंचित महिलाओं के सशक्तिकरण के प्रारंभिक उदाहरणों में से एक डेक्कन डेवलपमेंट सोसाइटी (डीडीएस) के द्वारा नैरोकास्टिंग को लेकर उठाए गए कदम भी है। डीडीएस विभिन्न मुद्दों पर दो दशकों से अधिक समय से ग्रामीण, गरीब और मुख्य रूप से दलित महिलाओं के साथ आंध्रप्रदेश के मेडक जिले के गांवों में काम कर रही है। इसका मुख्य उद्देश्य आत्मनिर्भरता है, खाद्य, बीज , प्राकृतिक संसाधन पर स्वायत्तता और बाजार तक पहुंच जैसे मुद्दों से स्थानीय महिलाओं को अवगत कराकर उन्हें आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाना है। वर्ष 1998 में यूनेस्को के समर्थन से डीडीएस ने एक स्थानीय समुदाय के स्वामित्व वाला रेडियो स्टेशन स्थापित करने का प्रयास किया था, लेकिन प्रसारण की अनुमति नहीं मिल पाई। इसके बाद डीडीएस ने ऑडियो प्रोडक्शन शुरू करने का फैसला किया कार्यक्रमों को गांव की महिलाओं तक पहुंचाने के लिए उत्पादन, और नैरोकास्टिंग तकनीकों का उपयोग किया गया।

महिला सशक्तिकरण, क्षेत्रीय विकास, स्वदेशी ज्ञान और संस्कृतियों से संबंधित मुद्दे कार्यक्रम का प्रमुख हिस्सा हुआ करते थे। इन कार्यक्रमों को महिलाओं के संगमों या स्थानीय समूहों के नेटवर्क के माध्यम से प्रसारित किया जाता था और एक विशिष्ट समय पर रेडियो प्रसारण की तरह सुना जाता था। डीडीएस सामुदायिक रेडियो परियोजना से जुड़ी पास्तापुर की दलित महिलाओं के सशक्तिकरण को दुनिया भर में सराहा गया और इससे सामुदायिक रेडियो स्वामित्व की मांग को मजबूत करने में मदद मिली। राजधानी दिल्ली से महज अस्सी किलोमीटर की दूरी पर हरियाणा का मुस्लिम बहुल मेवात जिला आता है, यहां अल्फाज- ए- मेवात नाम का सामुदायिक रेडियो महिलाओं की आवाज बुलंद कर रहा है। इस रेडियो पर स्थानीय महिलाएं अपनी समस्याओं पर खुलकर बात करती

हैं, मनपसंद गाने सुनती हैं। शुरूआत में यहां महिलाओं के साथ कार्य करना बहुत कठिन था। वे बात करने से झिझकती थीं, स्थानीय धर्म गुरूओं ने भी 'मनोरंजन हराम है' का नारा देकर महिलाओं की रेडियो में भागीदारी का विरोध किया।बाद के समय में इस रेडियो के प्रयासों और महिलाओं की भागीदारी के कारण यह सामुदायिक रेडियो यहां की महिलाओं की आवाज बन गया है। कम्युनिटी रेडियो एंड वुमन एंपावरमेंट नामक किताब की लेखिका डॉ. अर्पिता शर्मा के अनुसार भारत में भी महिलाओं की स्थिति बेहतर नहीं है।

भारतीय महिलाएं अभी भी स्वास्थ्य, शिक्षा, बेहतर जीवन के अवसर, यौन अपराध आदि जैसे कई मुद्दों पर हाशिए पर हैं। लेखिका भारत सरकार द्वारा महिलाओं के लिए उठाए जा रहे सकारात्मक कदमों और उन तक पहुंच सुनिश्चित करने में सामुदायिक रेडियो की भूमिका का वर्णन अपनी पुस्तक में करती हैं। उन्होंने भारतीय ग्रामीण महिलाओं में जागरूकता के लिए सामुदायिक रेडियो के महत्व और योगदान को विस्तार से बताया है। 'महिला सशक्तिकरण के लिए सामुदायिक रेडियो' में उल्लेख किया है कि सहभागी संचार समाज के कमजोर वर्ग जैसे महिलाओं, हाशिए पर रहने वाले वर्ग और अत्यंत वंचित समूह के विकास के लिए एक सच्चा उत्तर है। इस अध्ययन का प्रश्न यही है कि सामुदायिक रेडियो कार्यक्रमों के द्वारा महिला जागरूकता और सशक्तिकरण को किस प्रकार संभव बनाया जा सकता है, जिससे देश की वंचित आबादी को उसके उचित अधिकार प्राप्त हो सके।

2- साहित्य का पुनरावलोकन

विभिन्न समुदायों के बीच मीडिया द्वारा निभाई जाने वाली प्राथमिक भूमिकाओं में से एक लोगों और समाज के बीच एकता को बढ़ावा देना है। सामुदायिक रेडियो इस उद्देश्य को प्राप्त करने में एक महत्वपूर्ण उपकरण के रूप में कार्य करता है। यह व्यापक रूप से स्वीकार्य है कि सामुदायिक मीडिया, साझा हितों, स्थानीयता और सांस्कृतिक पहचान जैसे विभिन्न पहलुओं को शामिल कर सकता है **(अगाबा एवं इसाबीरये, 2024)**। युगांडा के नटुंगामो में किये गये अपने अध्ययन में अगाबा और इसाबिरये स्थानीय संदर्भ में लैंगिक असमानताओं को दूर करने के लिए सामुदायिक रेडियो द्वारा अपनाई गई रणनीतियों पर प्रकाश डालते हैं। मुख्यधारा की मीडिया द्वारा स्थानीय लोगों और उनकी संस्कृति के महत्व को अक्सर नजरअंदाज किया कर दिया जाता है। इस कमी को समुदाय- आधारित मीडिया पूरी करती है, इसीलिये सामुदायिक मीडिया की मांग भी बढ़ी है **(आवारे व अन्य, 2024)**। 'लोगों की आवाजः भारत में सामुदायिक रेडियो पर एक व्यापक समीक्षा' शीर्षक का यह शोधपत्र हाशिए पर रहने वाले समूहों, किसानों एवं महिलाओं की सूचनात्मक आवश्यकताओं को पूरा करके उन्हें सशक्त बनाने में सामुदायिक रेडियो की विवेचना करता है।विकास केवल आर्थिक विकास तक ही सीमित नहीं है। सामाजिक विकास के लिये, जमीनी स्तर पर महिलाओं को सशक्त बनाना और उनकी क्षमता निर्माण एक प्रमुख चिंता का विषय है। सामुदायिक रेडियो महिलाओं के सामाजिक- आर्थिक विकास के लिये भविष्य के उपकरण के रूप में उभर सकता है **(प्रसाद एवं दीपक, 2019)**।

'सामुदायिक रेडियो और महिला सशक्तिकरणः एक व्यवहारिक जांच' नामक शोधपत्र में इस बात प्रकाश डाला गया है कि सामुदायिक स्वामित्व और नियंत्रण के साथ- साथ समुदाय की भागीदारी सुनिश्चित कर यह माध्यम विकास प्रक्रिया में जवाबदेही और पारदर्शिता भी लाता है। महिला सशक्तिकरण, लैंगिक समानता से जुड़ी हुई अवधारणा है। सामुदायिक रेडियो महिलाओं को उनके अधिकारों के बारे में शिक्षित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, वे सीखने और कौशल विकास में सुधार करने के अवसर प्रदान करते हैं क्योंकि यह महिलाओं के आर्थिक

विकास के लिये आवश्यक है **(पारिक व अन्य, 2023)**। राजस्थान की ग्रामीण महिलाओं पर किये गये अध्ययन से यह निष्कर्ष निकला कि महिलाओं के सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक सशक्तिकरण को बढ़ावा देने में सामुदायिक रेडियो महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। करीब 95 प्रतिशत महिलाओं ने ये भी बताया कि वे अब घरेलू परिवेश के साथ- साथ अन्य मंचों पर भी अपनी राय और चिंताओं पर स्वतंत्र रूप से चर्चा करती हैं और आवाज उठाती हैं।

3- शोध के उद्देश्य

- महिला जागरूकता और सशक्तिकरण में सामुदायिक रेडियो की भूमिका के बारे में जानकारी लेना।
- सामुदायिक रेडियो द्वारा प्रसारित महिला जागरूकता कार्यक्रमों का विश्लेषण करना।
- विभिन्न महिला आधारित कार्यक्रमों के उद्देश्यों की विवेचना करना।
- महिला सशक्तिकरण हेतु इन कार्यक्रमों के क्रियान्वयन का मूल्यांकन करना।

4- शोध अधिगम

प्रस्तुत अध्ययन में शोध समस्या के निवारण तक पहुंचने के लिये केस स्टडी को अपनाया गया है। ब्रिटानिका द्वारा दी गई परिभाषा के अनुसार केस स्टडी, वास्तविक दुनिया में किसी विशिष्ट स्थिति का विस्तृत विवरण और मूल्यांकन है, जो उससे सामान्यीकरण और अंतर्दृष्टि प्राप्त करने के उद्देश्य से बनाया जाता है। इस अध्ययन में विभिन्न सरकारी और गैर-सरकारी संस्थाओं के द्वारा प्रोत्साहित अभियान कार्यक्रमों के उद्देश्य, कार्य व क्रियान्वयन का गहरा अध्ययन किया गया है। महिला सशक्तिकरण, और महिला जागरूकता से जुड़े कार्यक्रमों की पहुंच सामुदायिक रेडियो के माध्यम से समुदाय तक पहुंचाने में रेडियो की भूमिका की भी विवेचना विभिन्न उदाहरणों के माध्यम से की गई

4.1- घरेलू हिंसा पर आधारित कार्यक्रम *'हिंसा को नो'*

घरेलू हिंसा को कम करने और हिंसा के खिलाफ अपने अधिकारों से महिलाओं को जागरूक करने के उद्देश्य से 'हिंसा को नो ' कार्यक्रम की शुरूआत की गई। स्मार्ट (एसएमएआरटी- सीकींग मॉडर्न एप्लीकेशंस फॉर रियल ट्रांसफॉर्मेशन) द्वारा प्रोत्साहित यह कार्यक्रम,10 माह का एक रेडियो प्रोजक्ट है, जो महिलाओं पर हिंसा को कम करने पर केंद्रित है। इस परियोजना के प्रमुख घटक महिला समूह, महिलाओं के खिलाफ हिंसा पर रेडियो एपिसोड, नैरोकास्टिंग, आजीविका और प्रशिक्षण द्वारा कौशल विकास है। यह कार्यक्रम हरियाणा के नूंह जिले में शुरू किया गया। स्मार्ट संस्था के अनुसार नूंह मुस्लिम बहुल क्षेत्र है और यहां की जनसंख्या मुख्य रूप से मौसमी आजीविका पर ही निर्भर है। नीति आयोग द्वारा जारी रिपोर्ट के अनुसार भी यह जिला देश के सबसे पिछड़े जिलों की सूची में दूसरे सबसे निचले पायदान पर है। यहां का समुदाय विशेष तौर पर महिलाओं के लिये बहुत रूढ़िवादी है। अशिक्षा, कम उम्र में विवाह, कम उम्र में गर्भधारण, सम्पत्ति पर कोई अधिकार न होना, कौशल की कमी और भारी दहेज, इन सभी कारणों से यहां महिलाओं की स्थिति काफी खराब रही है। अपने अधिकारों के प्रति महिलाओं के जागरूक न होने कारण भी यहां महिलाओं पर हिंसा और प्रताड़ना के मामले देखे जाते रहें हैं। सामुदायिक रेडियो, रेडियो मेवात एवं स्मार्ट के संयुक्त प्रयासों से इस क्षेत्र में 'हिंसा को नो ' कार्यक्रम के तहत महिला सुरक्षा एवं जागरूकता से जुड़े प्रयास किये गए हैं। इसके माध्यम से प्रताड़ित महिला के परिवार की काउंलिंग के साथ साथ जरूरत पड़ने पर कानूनी सहायता भी प्रदान की जाती है, जिससे महिलाओं में निर्भिकता देखी जाती है, और उनके लिये परिवार और समाज में बेहतर माहौल तैयार हो रहा है। रेडियो के माध्यम से सूचना का लोकतंत्रीकरण स्मार्ट का मुख्य लक्ष्य रहा है। उन

स्थानों पर जहां रेडियो भी नहीं पहुंच पाता है, वहां अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिये स्मार्ट ने 'हिंसा को नो' नामक रेडियो कार्यक्रम को अभियान के रूप में देशभर में प्रसारित किया है। देशभर के अलग- अलग सामुदायिक रेडयो के माध्यम से ये कार्यक्रम दस माही अभियान के रूप में वंचित व उपेक्षित महिलाओं के बीच प्रसारित किया जा रहा है। इसके माध्यम से महिलाओं को घरों और रोजमर्रा की जिंदगी में होने वाले जेंडर आधारित भेदभाव, समाज में महिलाओं की स्थिति और उससे जुड़ी रूढ़िवादिता, हिंसा के संकेतों को पहचानना, घरेलू हिंसा को समझना, अपने अधिकार और घरेलू हिंसा की शिकायत की प्रक्रिया, घरेलू हिंसा का बच्चों पर प्रभाव आदि विषयों चर्चा की जाती है, कार्यक्रमों के माध्यम से उन्हें जागरूक किया जाता है और कार्यक्रम में हिस्सा लेने के लिये प्रोत्साहित किया जाता है। इन प्रयासों से महिलाएं जागरूक होने के साथ- साथ अपने अधिकारों के प्रति सजग भी हो रही हैं।

4.2- शिक्षा और आत्मनिर्भरता पर आधारित कार्यक्रम *'शक्ति - अरिवायादी'*

भारत सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी) के महिलाओं पर आधारित एक विशेष अभियान का नाम है साइंस फॉर वुमन (एसएफडब्ल्यू)। इस अभियान का उद्देश्य महिलाओं के लिये जीवन की गुणवत्ता, कामकाजी परिस्थितियों मं सुधार के लिये अनुसंधान, विकास और प्रौद्योगिकी के अनुकूलन को बढ़ावा देना, विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाओं के लिये लाभकारी रोजगार के नए अवसर प्रदान करना और प्रौद्योगिकी आधारित अवसरों में महिलाओं के योगदान को बढ़ाना है। विभाग के अनुसार इस अभियान के द्वारा फूलों की खेती, बागवानी, मशरूम की खेती, औषधीय और सुगंधित पौधों, जैव-उर्वरक, जैविक खेती, वर्मीकम्पोस्टिंग, सेरीकल्चर, जलीय कृषि, पशुपालन, मुर्गी पालन और कृषि के लिये बायोटेक पैकेज के माध्यम से स्वसहायता समूहों के साथ ही बड़ी संख्या में महिलाओं को भी सीधा लाभ हुआ है। इस अभियान को स्थानीय समुदायों से जोड़ने के लिये शैक्षणिक संस्थानों और सामुदायिक रेडियो का कार्य उल्लेखनीय रहा है।

सामुदायिक रेडियो की बात करें तो वर्ष 2004 में अन्ना एफएम ने भारत के पहले समुदाय आधारित कैंपस रेडियों के रूप में कार्य शुरू किया। यह सामुदायिक रेडियो ध्वनि तरंगों को लोकतांत्रिक बनाने में शिक्षकों, विद्यार्थियों और समुदाय के सक्रिय योगदान को सुनिश्चित करता है (प्रभाकर, 2013)। पूर्व के कुछ शोध के अनुसार अन्ना एफएम 90.4 ने एनसीएसटीसी के अभियान साइंस फॉर वुमन प्रोजेक्ट के तहत महिला आधारित कार्यक्रम 'शक्ति- अरियावादी', तमिल भाषा के इस शब्द का अर्थ है 'अपनी क्षमता को पहचानें', तैयार कर प्रसारित किया। थीम आधारित शिविरों, साप्ताहिक लाइव क्विज शो, नाटक और प्रदर्शन के साथ आउटरीच गतिविधियों के द्वारा समुदाय की महिलाओं से पारस्परिक संचार होने का अवसर मिला। पारस्परिक संचार के माध्यम से ही स्थानीय ग्रामीण महिलाओं में रोजमर्रा के विज्ञान संबंधी जागरूकता पैदा हुई। मुख्य रूप से फोन-इन कार्यक्रम के द्वारा स्वास्थ्य, पोषण, पर्यावरण, खाद्य प्रसंस्करण, दिन- प्रतिदिन का विज्ञान आदि विषयों पर कार्यक्रम किये गये। शोध से स्पष्ट हुआ कि इस कार्यक्रम में भाग लेने वाली समुदाय की महिला अब पहले से ज्यादा आश्वस्त हुई है और अपने जीवन पर भी उनका नियंत्रण भी बढ़ा है।

4.3- स्वास्थ्य व पोषण से जुड़ा कार्यक्रम *'पोषण की पोटली'*

यूनिसेफ (संयुक्त राष्ट्र अंतर्राष्ट्रीय बाल आपातकालीन कोष) के 2020-21 में जारी एक रिपोर्ट के अनुसार भारत में प्रत्येक 10 में से 4 बालिकाएं कुपोषित हैं। इनके आंकड़े बताते हैं कि कुपोषण की घटनाएं निम्न आर्थिक स्थिति वाले परिवारों और ग्रामीण क्षेत्रों के साथ साथ अशिक्षित और अकुशल वयस्कों वाले परिवारों में अधिक पाई गई। पोषण की पोटली', यूनिसेफ और स्मार्ट का संयुक्त अभियान रहा है, जिसमें नवजात बच्चे, किशोर बालिकाएं,

स्तनपान कराने वाली माताएं और गर्भस्थ महिलाओं के पोषण के विभिन्न पहलुओं पर समुदायों को संवेदनशील बनाने का प्रयास किया गया। इसके लिये सामुदायिक रेडियो की क्षमता और ज्ञान निर्माण पर ध्यान केंद्रित किया गया। इस अभियान का उद्देश्य सामुदायिक रेडयो के माध्यम से अपने लक्षित समूहों तक ज्यादा से ज्यादा पहुंच बनाकर पोषण संबंधी परिणामों में सुधार करना था। पोषण अभियान को जनआंदोलन के स्तर तक पहुंचाने के लिये स्मार्ट ने यूनिसेफ के साथ मिलकर परियोजना को डिजाइन किया, जिसमें सबसे पहले आकांक्षी जिलों के साथ सहयोग पर जोर दिया गया।

स्थानीय सामुदायिक रेडियो स्टेशनों के साथ जुड़कर, स्थानीय चुनौतियों, पारंपरिक प्रथाओं और मान्यताओं को संबोधित करके लक्षित समुदाय के दृष्टिकोण और मान्यताओं को बदलने की दिशा में काम किया। स्मार्ट के द्वारा इस परियोजना को देश के लगभग सभी प्रदेशों के चयनित सामुदायिक रेडियो स्टेशनों द्वारा लान्च किया जा चुका है। जैसे रेडियो मयूर 90.8 एफएम छपरा बिहार, स्टाइल रेडियो 90.4 एफएम छतरपुर मध्यप्रदेश, रेडियो मधुबन सिरोही राजस्थान, अल्फाज-ए-मेवात नूह हरियाणा, रेडियो गोरखपुर 90.8 एफएम गोरखपुर उत्तर प्रदेश, येरलावानी 91.2 एफएम सांगली महाराष्ट्र, रेडियो खांची 90.4 एफएम रांची झारखंड, रेडियो वर्षा गोपालगंज बिहार, रेडियो संवाद रायपुर छत्तीसगढ़ आदि। राजस्थान के सिरोही में प्रसारित होने वाले रेडियो मधुबन के उदाहरण से हम इस अभियान के कार्य और क्रियान्वयन को आसानी से समझ सकते हैं। यह रेडियो 24 घंटे प्रसारित होता है। आसपास के गांवों और आदिवासी समुदायों से यह स्टेशन गहराई से जुड़ा है , इसके लिये गांव में स्वयंसेवकों का एक कैडर भी बनाया गया है। रेडियो मधुबन अपने कार्यक्रमों में स्थानीय प्रशासन के विकास कार्यों को भी जगह देता है। इस क्षेत्र में मिथक और पारंपरिक प्रथाएं और अज्ञानता बहुत ज्यादा व्याप्त रहीं हैं। कुछ प्रथाएं नवजात बच्चों और महिलाओं के भोजन और पोषण को भी प्रभावित करती रहीं हैं। बाल विवाह भी काफी ज्यादा प्रचलन में रहा है। रेडियो मधुबन ने इस परियोजना के क्रियान्वयन की शुरूआत विद्यालयों के छात्रों तक पहुंच कर की। आउटरीच गतिविधियां, नुक्कड़ नाटक, संगीत, मंडली आदि के माध्यम से समुदाय के व्यवहार में परिवर्तन लाने का प्रयास किया गया।

5- विश्लेषण

वंचित महिलों को जागरूक कर और उन्हें सशक्त व आत्मनिर्भर बनाकर उनका विकास करना आज की महती आवश्यकता है। प्रस्तुत अध्ययन में लिये गए विभिन्न केस स्टडीज् के माध्यम से महिला आधारित विकास अभियानों तक महिलाओं की पहुंच और भागीदारी को बढ़ाने के लिये सामुदायिक रेडियो कार्यक्रमों की समीक्षा की गई है। 'हिंसा को नो ' कार्यक्रम महिला प्रताड़ना व लैंगिक असमानता जैसी ज्वलंत समस्याओं से निपटने के लिये प्रसारित किया गया था। हरियाणा के नूंह में इससे मिले सकारात्मक परिणामों ने स्मार्ट संस्था को प्रोत्साहित किया और फिर यह देश के अन्य सामुदायिक रेडियो के माध्यम से अलग समुदाय की वंचित व शोषित महिलाओं तक पहुंच पाया। 'पोषण की पोटली ' कार्यक्रम इसी बात को ध्यान में रखते हुए बनाई गई। स्मार्ट और यूनीसेफ के साझा प्रयासों ने इसका प्रसार भी व्यापक तौर पर किया। इससे ये बात भी सामने आई की समाज में पोषण संबंधी कई ऐसी मान्यताएं हैं जिनका विज्ञान और स्वास्थ्य से कोई लेना देना नहीं है। ऐसे में इन मिथकों को तोड़ना और नवाचार व ज्ञान का संचार करना बहुत बड़ी चुनौती रही है। इस चुनौती से निपटने के लिये सामुदायिक रेडियो के माध्यम से ही समुदाय का भरोसा जीतने में सफलता मिल रही है। महिलाओं के वंचित और हाशिए पर होने का सबसे बड़ा कारण उनका आत्मनिर्भर न होना है।

आत्मनिर्भर और शिक्षित महिला एक सुशिक्षित समाज की नींव होती है। अन्ना एफएम द्वारा संचालित कार्यक्रम 'शक्ति अरिवायादी' इसी दिशा में सकारात्मक भूमिका निभाते हुए समुदाय की महिलाओं में ज्ञान- विज्ञान के माध्यम से नवाचार और उद्यमिता को बढ़ावा देकर उन्हें आत्मनिर्भर बनने में सहायता कर रही है। इस प्रकार विकास लक्ष्यों तक पहुंचने के कार्यक्रमों को समाज के विविध समुदायों तक पहुंचाने में सामुदायिक रेडियो महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। साथ ही इन प्रयासों से महिलाओं का समग्र विकास हो रहा है, वे जागरूक होने के साथ- साथ सशक्त और आत्मनिर्भर बन रहीं हैं।

6- निष्कर्ष

- समाज में कई ऐसे समुदाय हैं जो वंचित और शोषित हैं, खासकर महिलाएं जिनकी आवाज दबा दी गई है। परंपराओं और रूढ़ियों से जकड़े समाज में महिला प्रताड़ना को भी न्यायोचित समझा जाता है। ऐसे में विभिन्न सामुदायिक रेडियो कार्यक्रमों द्वारा महिलाओं की आवाज को बुलंद किया जा रहा है। इससे वे अपने अधिकारों के प्रति भी सजग हुई हैं।
- स्वस्थ समाज की संकल्पना तब तक संभव नहीं है जब तक उस समाज की महिला स्वस्थ न हो। महिला ही भावी पीढ़ी को जन्म देती है और उसे पोषित करती है लेकिन विडंबना है कि हमारे देश में महिलाओं के पोषण को दोयम दर्जे पर रखा जाता है। पोषण व स्वास्थय संबंधी कार्यक्रमों के प्रसारण से अब महिलाओं की पोषण संबंधी जिज्ञासाओं का उचित उत्तर प्राप्त हो रहा है।
- आत्मनिर्भरता के लिये सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित कार्यक्रम, कौशल विकास और नवाचार में उनके योगदान से महिलाओं में आत्मनिर्भरता के साथ आत्मविश्वास की भी वृद्धि हो रही है।
- विभिन्न संगठन और संस्थाएं महिलाओं के समग्र विकास के लिये बनाये गए अभियानों को समुदाय तक पहुंचाने के लिये सामुदायिक रेडियो का सहारा ले रहे हैं जिनसे सकारात्मक परिणाम भी प्राप्त हो रहे हैं। साथ ही समुदाय की सहभागिता भी बढ़ती है।
- सामुदायिक रेडियो विकास संचार के उपकरण के रूप में स्थापित हो रहा है, जिससे वंचित महिलाओं के जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन आ रहा है।

7- उपसंहार

सामुदायिक रेडियो न केवल अपनी प्रोग्रामिंग को स्थानीय आवश्यकताओ के अनुरूप बनाने की क्षमता रखता है, अपितु यह जिस समुदाय में कार्य करता है, वहां की स्थानीय भाषा, परंपरा और मान्यताओं के साथ लगातार स्पष्ट और प्रभावी संवाद करता है। सामुदायिक रेडियो को विकास संचार के एक उपकरण के रूप में अच्छी तरह स्वीकार किया जाता है। यह अति स्थानीय होने के साथ समावेशी, सहभागी और सुलभ है। समुदाय द्वारा संचालित और प्रबंधित होने के कारण यह लोगों की संवेदनशीलता, स्थानीय प्रथाओं और व्यवहार को समझता है। संचार सामग्री को प्रासंगिक बनाकर, विकास में तेजी सुनिश्चित करना और व्यवहार को प्रभावित करना, सामुदायिक रेडियो के द्वारा लाए जा रहे महत्वपूर्ण सकारात्मक परिवर्तन हैं। ये परिवर्तन महिलाओं के समग्र विकास में भी परिलक्षित हो रहे हैं। जहां वंचित समुदायों की महिलाओं की आवाज बनकर सामुदायिक रेडियो उन्हें आत्मविश्वास प्रदान कर रहा है।

8- संदर्भ

1. Agaba, E., & Isabirye, J. (2024). Community Radio and the promotion of gender equality. A case study of Nyabihoko Sub-County, Ntungamo District. *IAA JOURNAL OF COMMUNICATION*, 10(1):1-13. https://doi.org/10.59298/IAAJC/2024/101.113.10000
2. Aware, P., Sawarkar, A., & Pawse, M. (2024). Voices of the people: A comprehensive review on community radio in India. *International Journal of Agriculture Extension and Social Development,* 7(8). https://doi.org/10.33545/26180723.2024.v7.i8e.927
3. Economic Survey. (n.d.). https://www.indiabudget.gov.in/economicsurvey/
4. Pareek, R., Sharma, L., & Drolia, R. (2023). Community Radio empowering the rural women of Rajasthan in India. *Journal of Communication and Management*, 2(02), 81–87. https://doi.org/10.58966/jcm2023221
5. Prabakar, N. (2013). *A study on the role of campus community radio Anna FM in inculcating everyday science awareness among marginalized women* [Anna University]. http://hdl.handle.net/10603/10553
6. Prasad, R., & Deepak, N. (2019). Community Radio and Women Empowerment: A pragmatic investigation. *New Media and Mass Communication*. https://doi.org/10.7176/nmmc/83-02
7. Sharma, A. (2015). Community Radio for Women Empowerment. New Delhi. Biotech Books
8. Yadav, R., Dubey, A., Verma, S. P., Sayyad, I., Sharma, P. K., Mishra, B. P., Thakur, A. K., Raghuvanshi, R., Yadav, S., Arun, A., Rajput, A., Deshmukh, S., Sharma, V., Kumari, M., Devi, A., Namdev, N., Shukla, A. K., Kelkar, K., Imran, . . . Ajay Kumar Gaur. (2021). *POSHAN KI POTLI IMPACT EVALUATION REPORT*. https://smartngo.org/wp-content/uploads/2021/06/Poshan-Ki-Potli.pdf

The Asian Thinker